Shatru Vinashak Maha Bhairava Shabar Stotram

शत्रुसंहारक महाभैरव शाबर स्तोत्रम्

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

विकट परिस्थिति, शत्रुभय, दुर्भाग्य एवं प्रेतबाधा आदि दुःखों के शमन हेतु भगवान् भैरव की उपासना सुप्रसिद्ध है। भगवान् शिव ने जगत् के कल्याण हेतु अपने अंश से कई रुद्रों की रचना की है। ग्यारह रुद्र एवं अष्टभैरव प्रमुख कहे गये हैं। प्रस्तुत भैरव स्तोत्र विशेष घातक एवं प्रभावशाली है। जिसके समुचित प्रयोग से शत्रु कुल सहित महाविनाश को प्राप्त होता है। कहा जाता है कि जिस महात्मा ने अपने शत्रुओं के विनाश हेतु इस स्तोत्र की रचना कर इसका प्रयोग किया था, उसका प्रबल प्रभाव 150 वर्षों से आज भी है। शत्रुओं के संहार के अतिरिक्त वह गांव आज भी वीरान है। अपने प्राण संकट में आने पर अथवा अन्य किसी विकट परिस्थिति में ही इस प्रकार के उग्र प्रयोग करने की अनुमति शास्त्रों में है। सामान्य स्थिति में प्रयोग करने पर साधक

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

का ही अहित होता है। इस प्रकार के उग्र प्रयोगों का अधिकारी एक विशिष्ट साधक ही हो सकता है, साधारण मनुष्य नहीं। दुरूपयोग के भय से प्रयोग विधि नहीं दी जा रही है। गुरुमुख से विधि जानें। प्रयोग करते समय नित्य शान्ति पाठ एवं कर्म अवश्य करें।

स्तोत्र- हनहन दुष्टन को, प्राणनाथ हाथ गहि, पटकि मही-तल मिटाओ सब शोक को। हमें जो सतावे जन, काम-मन-वाक्यन ते, बार बार तिनको पठाओ यमलोक को। वाको घर मसान करौ संसत श्रृगाल रौवें, रुधिर कपाल भरो उर शूल चोक को। भैरो महाराज! मम काज आज एही करौ, शरण तिहारो वेग माफ करो चूक को। ।।1।।

भलभल करे ओ विपक्षी पक्ष, आपनो टरे ना टारे, काहू के त्रिशूल दण्ड रावरो। घेरिघेरि छलिन छकाओ, छिति छल माहिं बचै नाहीं, नातीपूत सहित स पाँवरौ। हेरिहेरि निन्दक सकल निरमूल करो, चूसि लेहु रुधिर रस धारो शत्रु सागरो। झपटि-झपटि झूमि-झूमि काल दण्ड मारो, जाहि यमलोक वैरि वृन्द को विदा करो। ।।2।।

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

झपटि के सारमेय पीठ पै सवार होहु, दपटि दबाओ तिरशूल देर ना करो। रपटि-रपटि रहपट एक मारो, नाथ! नाक से रुधिर गिरै, मुण्ड से व्यथा करो। हरषि निरिखि यह काम मेरो, जल्दी करो सुनि के कृपानिधान भैरोजी! कृपा करो। हरो धनदार-परिवार, मारो पकरिके, बचै सौ बहि जाइ नदी नार जा भरो। ।।3।।

जाहि जर-मूर से रहे न वाके बंस कोई, रोइ-रोइ छाती पीटै, करै हाइ-हाइ के। रोग अरु दोष कर, प्राणी विललाइ, वाके कोई न सहाइ लागै, मरै धाइ-धाइ के। खलन खधारि, दण्ड देहु दीनानाथ! मैं तो परम अनाथ, दया करो आइ-आइ के। जनम-जनम गुन गाइ के बितैहों दिन, भैरो महाराज! वैरी मारो, जाइ-जाइ के। ।।4।।

रात-दिन पीरा उठै, लोहू कटिकटि गिरे, फारि के करेजा ताके बंस में समाइ जा। रिरिकि-रिरिकि मरे, काहू को उपाय कछू लागै नाहीं एको जुक्ति, हाड़माँस खाइजा। फिरत-फिरत फिरि आवै, चाहे चारों ओर यंत्रमंत्रतंत्र को प्रभाव विनसाइ जा। भैरो महाराज! मम काज आज एहि करौ, शत्रुन के मारि दुःख दुसह बढ़ाइ जा। ।।5।।

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

झट-झट पेट चीर, चीर के बहाइ देह, भूत औ पिशाच पीवैं रुधिर अघाइ कै। रटि-रटि कहत सुनत नाहीं, भूतनाथ! तुम बिनु कवन सहाय करै आइ कै। भभकि-भभकि रिपु तन से रुधिर गिरे, चभकि-चभकि पिओ कुकुर लिआइ कै। हहरि-हहरि हिआ फाटै सब शत्रून को, सुनहु सवाल हाल कासो कहैं जाइ कै। ।।6।।

जरै ज्वर जाल काल भृकुटि कराल करो, शत्रुन की सेखि देखि जात नहीं नेक हूँ। तेरो है विश्वास, त्रास एको नहीं काहू केर लागत हमारे, कृपा दृष्टि कर देख हूँ। भैरो! उनमत्त ताहि कीजिये, उनमत्त आज गिरै जम ज्वाल नदी जल्दी से फेंक हूँ। यम कर दूत जहाँ भूत सम दण्ड मारै, फूटे शिर, टूटे हाड़, बचै नाहिं एक हूँ। ।।7।।

हवकि हवकि मांस काटि दाँतन से, बोटि बोटि वीरन के, नवो नाथ खाइ जा। भूत-वेताल ववकारत, पुकार करै, आज नर रुधिर पर वहै आइ जा। डाकिनी अनेक डडकारैं, सब शत्रुन के रुधिर कपाल भरि-भरि के पिआई जा। भैरो भूतनाथ! मेरो काज आज एहि करो, दुर्जन के तन-धन अबहीं नसाइ जा। ।।8।।

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

शत्रुन संहार आज, अष्टक बनाए आज, षट-जुग ग्रह शशि सम्वत में सजि कै। फागुन अजोरे पाख, वाण तिथि, सोमवार पढ़त जो प्रातः काल उठि नींद तजि कै। शत्रुन संहार होत, आपन सब काज होत, सन्तन सुतार होत, नातीपूत रजि कै। कहै गुरुदत्त तीनि मास, तीनि साल महँ, शत्रु जमलोक जैहै बचिहै न भजि कै। ।।9।। अन्त में क्षमायाचना करते हुए दीपदान प्रदान करें।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com

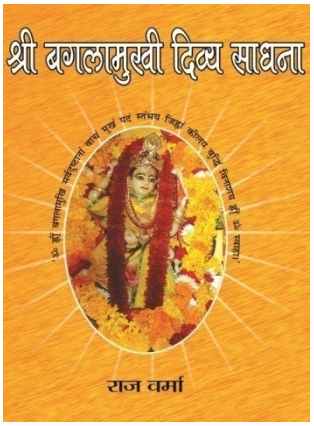

Shri Raj verma ji
Contact- +91-9897507933,+91-7500292413
Email- mahakalshakti@gmail.com